ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-8* September- 2017
Innovation The Research Concept

जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा तथा महत्व

सारांश

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। शिक्षा परिवर्तन का सबसे सषक्त माध्यम है। कहा भी गया है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसलिये वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उचित पाठ्यक्रम का समावेष करके जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से इस विश्वव्यापी ज्वलंत समस्या का समाधान किया जा सकता है। शिक्षा मानव को अपने विचाारों को व्यवहार में परिणित करने, समय एवं परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करने स्वयं तथा अपने परिवेश को समझने की शक्ति प्रदान कर सुसमायोजन करने की प्रेरणा देती है। मानव शिक्षा के माध्यम से स्वयं को तथा परिवेश को परिस्कृत कर सकता है। क्योकि शिक्षण प्रक्रिया में जाने पर जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न सभी समस्याओं से स्वयं अवगत हो सकेगें।

मुख्य शब्द : समावेश, ज्वलंत, गोचर, द्रुत, वैश्विक, कोलाहल, अवलम्बन।

मंजय कुमार
वरिष्ठ प्रवक्ता,
शिक्षा संकाय,
आई0एम0आर0,
दुहाई, गाजियाबाद

प्रस्तावना

जनसंख्या की विस्फोटक स्थिति आज समूचे विश्व के लिये एक चुनौती बनकर खड़ी हुई है जो अखिल मानवता के पतन और विध्वंस का कारण बनती जा रही है। भारत एक विशाल प्रजातांत्रिक देश है आज देश की जनसंख्या 1 अरब, 21 करोड़ की सीमा को पार कर चुकी है। आज हम जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान प्राप्त कर लेगे। यद्यपि आज हमारा देश जीवन के सभी क्षेत्रों में विकास कर रहा है किन्तु तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या ने इस विकास की गति को अवरोध कर दिया है। हम आज भी आधुनिकता के दौर में पुरानी रूढियों से बुरी तरह से जकड़े हुये है। हमारा जीवन गतिषील व विकासोन्मुख नही के बराबर है। हमारे परिवार की समृद्धि आबादी की भीड़ के कारण नष्ट हो चुकी है। आज सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विकास के समक्ष प्रश्न चिन्ह सा लगा हुआ है। हमने जीवन में एक मानवीय संवेदनापूर्ण आकांक्षा व जीवन मूल्य से भरे सुखद , आहलादाक जीवन की परिकल्पना की थी। इन सारे सपनों को हमने परिवार का आकार बढ़ाकर ध्वस्त कर दिया है।

जनसंख्या की वर्तमान स्थिति से उत्पन्न हुई समस्या को जनसंख्या शिक्षा के विवेकपूर्ण शैक्षिक अवबोध की तलाश है। मनुष्य जनसंख्या की वृद्धि से कितना व्यग्र व अशान्त है यह तो स्कूल– कॉलेज के दाखिले से लेकर अस्पताल, रेल, बस आदि सब जगह भीड़ से स्वयं प्रमाणित है। जीवन में कोलाहल छाने का प्रमुख कारण परिवार के आकार में वृद्धि ही है।

अध्ययन का उद्देश्य

जनसंख्या वृद्धि आज सम्पूर्ण विश्व की एक प्रमुख समस्या है। इसलिए जनसंख्या शिक्षा के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य इस वैषिवक समस्या के कारण तथा समाधान से लोगों को अवगत कराना है।इसके अध्ययन का यह भी उद्देश्य कि लोगों को यह बताना कि उनके आर्थिक व सामाजिक पिछड़ेपन का कारण, उनके परिवार का बढ़ता आकार है, साथ ही यह भी बताना है कि अधिकतर सामाजिक समस्याओं का कारण भी बढ़ती जनसंख्या है। इस अध्ययन का यह भी एक उद्देश्य है कि लोगों को इस बात से अवगत कराना कि यदि हमने बढ़ती जनसंख्या को नियन्त्रित कर लिया तो व्यक्तिगत तथा राष्ट्र के रूप में आर्थिक रूप से मजबूत हो जायेगे।

विकास जीवन में प्रबुद्ध रहा है। मनुष्य विकास से जुड़ा हुआ प्राणी है। बढती आबादी के इस धारण के खंड –खंड कर दिये जिसके कारण आज वह न तो भावी पीढी के संस्कृति संस्कार, गुंणवत्ता जीवन के प्रति संवेदनषील व सक्रिय है न ही वह सामाजिक, आर्थिक विकास का घटक बन पा रहा है। जनसंख्या के सम्बन्ध में जी. सी. हिप्पल के विचार आज भी उत्प्रेरक है – एक राष्ट् की सम्पदा भूमि, जल, वन खान, झुंडो, गिरोह, डालर में नही है बल्कि किसी राष्ट्र की सम्पदा स्वस्थ, प्रसन्न स्त्री पुरूष और बच्चें है।

जनसंख्या वृद्धि क्या है ?

वास्तव में जनसंख्या वृद्धि का ज्ञान जन्म दर और मृत्यु दर में अन्तर से होता है। जन्म दर अधिक होना और मृत्यु दर कम होना यही जनसंख्या वृद्धि की गति को प्रदर्षित करता है।

जन्म दर से तात्पर्य एक वर्ष में प्रति हजार जनसंख्या पर जीवित जनसंख्या को जन्म दर कहते है। मृत्यु दर एक वर्ष में प्रति हजार जनसंख्या पर मृत्यु की प्राप्त व्यक्तियों की संख्या को मृत्यु दर कहते है। वर्तमान में स्वास्थ्य सेवाओं की अच्छी व्यवस्था है। महामारी, प्लेग तथा हैजा आदि रोगों पर पूर्ण नियन्त्रण हो गया है खाद्य पदार्थ खूब उत्पन्न किये जाते है तथा अकाल आदि अब संसार में कम ही आते है जिसके परिणाम स्वरूप मृत्यु दर कम हो गई है और जन्म दर बढ रही है जिससे जनसंख्या वृद्धि हो रही है।

जनसंख्या वृद्धि की स्थिति

भारत वर्ष की जनसंख्या वृद्धि को जनगणना के आंकड़ों के माध्यम से देखा जा सकता है।

वर्ष	करोड़ में
1901	23.83
1911	25.21
1921	25.13
1931	27.90
1941	31.86
1951	36.11
1961	43.92
1971	54.82
1981	68.52
1991	84.39
2001	100.00
2011	121.00

भारत वर्ष में 1921 तक जनसंख्या वृद्धि की विभिन्न परम्परा रही। जनगणना के अनुसार 1921 जनांकिकी का एक इतिहास प्रस्तुत करता है। 1881–1921 में भारतीय आबादी वास्तव में दो बार अपनी हासोन्मुखी प्रवृति को दिखाती है। वर्ष 1951 तक एक मॉडरेट रेट में दिखती है वास्तव में 1911–21 में इन्फलूएंजा में 20 मिलियन मानव काल के ग्रास बन गये व दूसरी अन्य संक्रामक बीमारियों का भी इसमें योगदान रहा। 1943 में बंगाल के अकाल में तीन मिलियन लोग अकाल के ग्रास बन गये। यह जनसंख्या का स्थायित्व पष्चिम के औद्योगिक देशों से भिन्न जनांकिकी स्थायित्व था। यह वास्तव में गरीबी, अशिक्षा कुस्वास्थ्य का सूचनांक था जो सरकार के दायित्व की और संकेत करता था। जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ऊँची थी और वार्षिक वृद्धिदर एक प्रतिशत थी, यह 1941 से 1951 की जनांकिकी का संकमण काल था। 1951–61 के दशक में मृत्यु दर बहुत शीघ्रता के साथ गिरने लगी और जन्मदर ऊँची रही। 1941–51 के बाद यह दूसरा संक्रमण काल 1951–61 के दशक का था। इस प्रकार से हमारी आबादी में द्रुत गति से वृद्धि के चिन्ह गोचर हुये। 2001 की जनगणना में हमारी आबादी 100 करोड़ से अधिक हो गयी। सम्प्रति भारत विश्व का दूसरा जनसंख्या बहुल देश है।

जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक हस्तक्षेप है

आज 21वीं सदी के सदंर्भ में शिक्षा का दायरा बहुत विस्तृत हो गया है। सामाजिक समस्याओं के निदान में शिक्षा की भूमिका द्रुतगति से बढ़ रही है। जनसंख्या वृद्धि पर नियत्रण रख पाना एक वैष्विक चुनौती है। भारत वर्ष में परिवार कल्याण के माध्यम से भी परिवार नियोजन आदि माध्यमों से बढ़ती जनसख्या पर अंकुश लगाने की कोशिश की गई किन्तु आकांक्षित सफलता नही मिल पाई। विश्व स्तर पर सोचा गया कि विचार परिवर्तन के द्वारा जनसंख्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

शिक्षा वैचारिक, सामाजिक परिवर्तन का सषक्त माध्यम है। सामाजिक, बौद्धिक तथा आर्थिक विकास की गुणवत्ता के लिये जनसंख्या शिक्षा की पूर्ण प्रासंगिकता है ऐसे कार्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हमारी राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में जब शिक्षा का हस्तक्षेप होता है तो हस्तक्षेप के लिये किसी प्रक्रिया का अवलम्बन लेना होता है। पूरी तरह जनसंख्या वृद्धि जैसे दानव से निजात पाने के लिये शिक्षा का अमोघ अस्त्र है। समय की पुकार पर शैक्षिक योजनाबद्ध कार्यक्रम के माध्यम से छोटे परिवार के मानक को भावी पीढ़ी के समक्ष रखना है। अपने जीवन में बड़े परिवार की खस्ताहाल स्थिति का अध्ययन कर के सोच सकेंगे कि पारिवारिक परिवेश का सुसंस्कृत ढाचा ध्वस्त हो गया है।

आबादी के बढ़ने पर भूमि, जल, वायु प्राकृतिक संपदाओं पर बुरा प्रभाव पड़ता है। मानव को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है संतुलित पौष्ठिक आहार भी मिलना दुर्लभ हो गया। वस्त्र, आवास, चिकित्सा, शिक्षा, रोजगार के अवसर की दृष्टि से समस्या की विकटता जीवन को क्षत विक्षत कर रही है जीवन जीना अब भार हो गया है।

जीवन में गुण पर परिमाण हावी हो गया है जिसके चलते जीवन की गुणवत्ता में कमी आई है। जीवन की गुणवत्ता की हासोन्मुखी प्रवृति , मनोरंजन की सामग्री, पुस्तक क्रय, खेल खिलौने, मनोरंजन की अन्य सुविधाओं तथा जीवन स्तर में कमी आयी है। सम्पूर्ण रूप से देखा जाये तो आज जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं को मुहैया करने में हमें दिक्कते हो रही है।

जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि से नाना प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हुई है। इसलिये शैक्षिक हस्तक्षेप आवश्यक है ताकि विचारधारा को मोड़ा जा सके और भावी पीढ़ी में परिवार के छोटे आकार के प्रति सोच समझ विकसित हो सकें।

जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न सामाजिक विसंगतियों को दूर करने के लिए जनसंख्या शिक्षा एक प्रभावी कदम है। जनसंख्या शिक्षा की प्रासंगिकता है क्योकि यह राष्ट्रीय समस्याओं में से मूल समस्या है। जनसंख्या वृद्धि पर एक अनुशासन नियंत्रण की दशा में सोचने–समझनें, निर्णय लेने की शक्ति का विकास करना है। बढ़ती जनसंख्या, घटती सुविधाये की जानकारी से भावी पीढी जो कक्षा में तैयार हो रही है उसे जनसंख्या वृद्धि का भोजन, वस्त्र ,

आवास, यातायात, पर्यावरण, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा, सुविधा आदि पर पढ़ने वाले प्रभाव से अवगत कराना है।

शिक्षा सही मायने में एक सामाजिक राष्टीय व्यवस्था का सिलसिला है। आज जनसंख्या वृद्धि का सीनेरियों यह है कि हमारी आबादी की रफतार तेज होने से अन्न, आवास, की आवश्यकता बढने लगी है। यह ज्ञातव्य है कि विश्व की कुल आबादी की 16 प्रतिशत आबादी भारत में है जबकि 2.4 प्रतिशत भूमि ही भारत के पास है। यह आने वाले समय में सर्वाधिक आबादी वाला देश हो जायेगा यह अनुमान है।

आवासीय व अन्न की समस्या के समाधानार्थ जगंलों को काटकर खेत व मकान बनाये जा रहे है। जंगलों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। हमारी वनसम्पदा शक्ति कम होती जा रही है। हमारी शक्ति के अन्य स्रोत वनों के विनाष से कम होते जा रहें है जिससे हमारी संस्कृति, सभ्यता भी प्रभावित हो रही है और पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड रहा है। स्वच्छ वायु का अभाव भी नानाधिक रोगों को उत्पन्न कर रहा है, बाढ का खतरा भी हो रहा है।

हमारी आबादी बढ़ने का कारण है कम उम्र में विवाह तथा षिषु जन्म दर का अधिक होना आदि समाज में फैली भ्रान्ति धारणायें ही है। अशिक्षा, पिछड़ापन, गरीबी भी जनसंख्या बढ़ने के महत्वपूर्ण कारण है। इससे एक प्रश्न उभरता है कि अभिभावक के उत्तरदायी व्यवहार से जनसंख्या की बेतहाशा पर अंकुश लगाया जा सकता है। अभिभावकों का उत्तरदायित्व केवल बच्चों को जन्म देना ही नही, बल्कि उनका सही लालन–पालन भी। यह चेतना भावी पीढ़ी में शिक्षण के माध्यम से ही तो वे समझेगे कि आय के स्रोत से परिवार की गुंणवत्ता का सम्बन्ध है। अभिभावक के रूप में भावी पीढ़ी के अभिभावकीय उत्तरदायित्व से परिचित कराना है ताकि उन्हें बच्चों के वस्त्र,आवास, शिक्षा, मनोरंजन पौष्टिक आहर देने योग्य ही परिवार के आकार को बढ़ाना होगा। सब प्रकार से जनसंख्या शिक्षा मानवीय संतुलन विकास संबंधित है।

जनसंख्या शिक्षा क्या है?

जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक प्रक्रिया है जो मानव कें स्वयं के लिये तथा समाज जिसमें सम्पूर्ण पृथ्वी सम्मिलित है– जनसंख्या सम्बन्धी कारणों और परिणामों को समझने में सहायक होती है।

जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जो परिवार, समूह राष्ट्र तथा विश्व की जनसंख्या स्थिति के सन्दर्भ विद्यार्थियों में आदर्श एव।जिम्मेदारी पूर्ण अभिवृति तथा व्यवहार विकसित करती है **(यूनेस्को)**

जनसंख्यां शिक्षा के क्षेत्र

1. जनांकिकी जनसंख्या वृद्धि की स्थिति तथा जनांकिकी के विभिन्न पहलु जनसंख्या वृद्धि के कारण व परिणाम
2. जनसंख्या– सामाजिक विकास
3. जनसंख्या शिक्षा, आर्थिक विकास
4. जनसंख्या, स्वास्थ्य व पोषण
5. जैविक तत्व–पारिवारिक जीवन व जनसंख्या
6. जनसंख्या पर्यावरण व प्रदूषण।

ये क्षेत्र पाठयक्रम के विषय अर्थशास्त्र, जीव विज्ञान, शारीरिक शिक्षा, समाज विज्ञान, गृह विज्ञान, पर्यावरण आदि विषयों से सम्बन्धित है। इन क्षेत्रों से कुछ संदेश लिये गये जिनकी पहुंच को विद्यालयी छात्रों के बीच ले जाना है। प्रारम्भिक दौर के संदेश निम्न लिखित है–

1. जनसंख्या परिवर्तन पर्यावरण व संसाधन विकास।
2. जनसंख्या जनित धारणायें व मूल्य।
3. नारी की स्थिति।
4. देर से विवाह।
5. उत्तरदायी अभिभावक।
6. परिवार का आकार व परिवार कल्याण किषोरावस्था।

कैरो के अन्तर्राष्टीय सम्मेलन में व्यक्ति के संतुलित विकास पर ध्यान केन्द्रित किया गया। विकास से जनसंख्या को जोड़ा गया और जनसंख्या स्थिरीकरण पर बल दिया गया। कैरों सम्मेलन के आधार पर जनसंख्या शिक्षा के निम्नलिखित मुद्दे निर्धारित किये गयें–

1. परिवार
2. परिवार का आकार व स्वरूप
3. व्यक्ति के अधिकार व कर्त्तव्य
4. प्रजनन स्वास्थ्य
5. जनसंख्या तथा विकास
6. जनसंख्या स्थिरीकरण
7. बालिका शिक्षा
8. महिला समता, समानता, सशक्तिकरण आदि।

निष्कर्ष

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। शिक्षा परिवर्तन का सबसे सषक्त माध्यम है। कहा भी गया है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसलिये वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उचित पाठ्यक्रम का समावेष करके जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से इस विश्वव्यापी ज्वलंत समस्या का समाधान किया जा सकता है। शिक्षा मानव को अपने विचाारों को व्यवहार में परिणित करने, समय एवं परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करने स्वयं तथा अपने परिवेश को समझने की शक्ति प्रदान कर सुसमायोजन करने की प्रेरणा देती है। मानव शिक्षा के माध्यम से स्वयं को तथा परिवेश को परिस्कृत कर सकता है। क्योकि शिक्षण प्रक्रिया में जाने पर जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न सभी समस्याओं से स्वयं अवगत हो सकेगें।

जिससे उनमें बढती जनसंख्या के प्रति उचित दृष्टिकोण विकसित होगा। जिससे देश और सम्पूर्ण संसार का कल्याण सम्भव हो सकेगा और जन–जन की वाणी से यह शुभेच्छा निकलेगी–

"सर्वेः भवन्तु सुखिनः, सर्वेः सन्तु निरामयाः
सर्वेः भद्राणी पष्यन्तुः,मा कषिचद् दुःख भाग्भवेत।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वर्तमान् भारत में गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वालो के लिए जनसंख्या शिक्षा की प्रासंगिकता जनपद अम्बेडकर नगर के सन्दर्भ में , 2017, 'षोध प्रबन्ध मजंय कुमार डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद।*
2. *बघेला जे0 के0, जनसंख्या शिक्षा, 2016 लाल बुक डिपों मेरठ।*
3. *सिंह डी0 के0 , 2009 . जनसंख्या शिक्षा – विनोद पब्लिकेशन, आगरा।*